# समसामयिक मुद्दे एवं चुनौतियाँ

सम्पादक- डॉ. एस.आर. चौधरी
सह सम्पादक- डॉ. अनिल कुमार शर्मा

सम्पादक
डॉ. एस.आर. चौधरी
सह-सम्पादक
डॉ. अनिल कुमार शर्मा

आई.एस.बी.एन.
978-93-88031-66-0

प्रकाशक
बाबा पब्लिकेशन
930-931, गजकृपा कॉम्पलैक्स, एस.बी.बी.जे. बैंक के पीछे
गोवर्धन नाथजी की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर
मो. 8003502015, 8952834490
E-mail : babapublication@gmail.com

संस्करण
2020

सर्वाधिकार
लेखकाधीन

मूल्य
₹ 2350/-

लेजर टाइपसैटिंग
राजीव कुमावत

मुद्रक
नई दिल्ली

पुस्तक प्रकाशन में पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि, कमी अथवा लोप का रह जाना सम्भव है। अतः किसी भी त्रुटि, कमी एवं लोप के कारण क्षति अथवा क्लेष के लिए लेखक, प्रकाशक, वितरक अथवा मुद्रक का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा।

17. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में जाति की भूमिका — 198
सुमन मौर्य

18. ग्रामीण विकास की अवधारणा और महिला सशक्तिकरण — 204
डॉ. अपेक्षा मीना

19. ग्रामीण विकास का सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में महत्व — 214
डॉ0 हीरालाल बैरवा

20. कोरोना : वैश्विक संकट – भारत के समक्ष चुनौतियाँ एवं समाधान — 228
डॉ. रजनी मीना

21. राजनीति में महिला आरक्षण : नवीन आयाम एवं चुनौतियाँ — 237
डॉ. मक्खन लाल नायक

22. महिलाओं के विरुद्ध हिंसा — 246
डॉ. फतेह सिंह चारण

23. शेखावाटी प्रदेश में सांस्कृतिक पर्यटन : चुनौतियां एवं सुझाव — 254
डॉ. योगेश कुमार सबल

24. समसामयिक भारतीय शिल्पकारों का कौशल विकास, रोजगार एवं वर्तमान चुनौतियाँ — 271
डॉ. पवन कुमार जाँगिड.

25. भारतीय राष्ट्रवादी इतिहास लेखन : एक पुनरीक्षण — 280
अमित कुमार रैंकवार

26. अम्बेडकर के शैक्षिक चिंतन की वर्तमान प्रासंगिकता — 290
डॉ. पदमा मीणा

27. कला शिक्षा एवं वर्तमान चुनौतियाँ — 297
डॉ. गीता शर्मा

28. शक्ति व विकास का प्रतीक : वर्तमान नारी — 304
डॉ. आँचल मीणा

29. वर्तमान परिदृश्य में महिला सशक्तीकरण एवं जनसंचार — 315
डॉ भवशेखर

30. The Role of Elearning Tools in Teaching and Learning English Language in Covid-19 Crises — 323
Dr. Ekta Goswami

31. Biodiversity Loss : The Burgeoning Challenge to Human Helath — 330
Sujata Mathur

32. Gender Equality and Constitutional Provisions for Women in India - A study — 338
Dr. Pratima Bhardwaj

33. Democracy in India : A Conceptual Paradigm — 349
Dr. Viplav

34. Natural Resources and Associated Problems — 356
Lata Kumari Chhachhia

# शक्ति व विकास का प्रतीक : वर्तमान नारी

डॉ. आँचल मीणा
सहायक आचार्य–राजनीति विज्ञान
राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़, अलवर (राज.)

सम्पूर्ण धरातल के मानस पटल पर नारी को सदैव देवतुल्य माना गया है। नारी द्वारा भी इस तथ्य को प्रत्येक काल में प्रमाणित किया गया है। "गार्गी याज्ञवल्क्य संवाद" इसका अविस्मरणीय उदाहरण है। वेद, पुराणों में भी महिलाओं की श्रेष्ठता का अनेक बार महिमा मंडन किया गया है। ईश्वर द्वारा रचित इस सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ रचना मानव को माना गया है जिसमें स्त्री का स्थान सर्वप्रथम है। नारी की सर्जना करने वाले ब्रह्माजी ने आज की नारी की सुदृढ़ सामाजिक स्थिति बहुआयामी व्यक्तित्व की प्रतिभा को बिखेरती नारी के वर्तमान स्वरूप को देखकर कभी यह सोचा भी न होगा कि इस पुरुष प्रधान समाज में नारी इतनी उन्नति कर पाएगी या अपना स्थान सुनिश्चित कर पुरुषों से चार कदम आगे निकल जाएगी किन्तु वर्तमान में यही सत्य है, क्योंकि वर्तमान युग कलयुग है। इस कलयुग या मशीनीयुग में एक ओर जहाँ नारी के और उत्तरदायित्व बढ़े हैं, वहीं दूसरी ओर इसने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाकर ख्याति प्राप्त की।

नारी ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट कृति, सृष्टि का उद्‌गम स्रोत एवं जीवन रूपी द्विपादचक्रवाहिनी का एक मजबूत पहिया है। ममता व करूणा की प्रतिमूर्ति, त्याग और बलिदान की अधिष्ठात्री, प्रेम एवं समर्पण की पयार्य आदि विभिन्न आद्‌र्शवादी स्वरूपों में महिलाओं की भूमिका ही अविस्मरणीय रही है। नारी शिक्षा, शील, ममता, विश्वास, स्नेह ओर वात्सल्य की शक्ति अर्जित करके समाज को इतना उक्त कर सकती है कि पुरुष को उनके साथ रहने पर गर्व

# भारत में लैंगिक समानता

## राजनीतिक-सामाजिक आयाम

**डॉ. रीतेश जैन**
सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान विभाग)
राजकीय कन्या महाविद्यालय, करौली (राजस्थान)

**मुनेश लाल मीना**
सहायक आचार्य (रसायन शास्त्र विभाग)
राजकीय कन्या महाविद्यालय, करौली (राजस्थान)

बाबा पब्लिकेशन-जयपुर

लेखक
डॉ. रीतेश जैन
मुनेश लाल मीना

आई.एस.बी.एन.
978-93-88031-47-9

प्रकाशक
**बाबा पब्लिकेशन**
930-931, गजकृपा कॉम्पलैक्स, एस.बी.बी.जे. बैंक के पीछे
गोवर्धन नाथजी की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर
मो. 8003502015, 8952834490
E-mail : babapublication@gmail.com

संस्करण
2020

सर्वाधिकार
लेखकाधीन

मूल्य
₹ 1400/-

लेजर टाइपसैटिंग
राजीव कुमावत

मुद्रक
नई दिल्ली

पुस्तक प्रकाशन में पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि, कमी अथवा लोप का रह जाना सम्भव है। अतः किसी भी त्रुटि, कमी एवं लोप के कारण क्षति अथवा क्लेष के लिए लेखक, प्रकाशक, वितरक अथवा मुद्रक का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा।

# अनुक्रमणिका

क्र.सं .....पृष्ठ संख्या


प्राक्कथन

1. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में सहभागिता एवं लैंगिक समानता ..... 9-24
**– डॉ. रीतेश जैन**

2. लिंग समानता – सामाजिक आर्थिक आयाम ..... 25-30
**डॉ. पूनम चौधरी**

3. भारतीय समाज में स्त्री–विमर्श का ऐतिहासिक सन्दर्भ में समाजशास्त्रीय अवलोकन ..... 31-40
**रूक्मणी मीना**

4. औपनिवेशिक भारत और आधी आबादी ..... 41-49
**कविता वर्मा**

5. महिला सुरक्षा का संकट : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण ..... 50-56
**डॉ. ज्योति सिडाना**

6. पर्यावरण सुरक्षा में महिलाओं की भूमिका ..... 57-64
**रमेशी मीना**

7. कामायनी महाकाव्य में युगबोध : नारी पात्रों के सन्दर्भ में ..... 65-69
**डॉ. अरविंद कुमार दीक्षित**

8. लैंगिक समानता में शिक्षा की भूमिका ..... 70-79
**धीरज कुमार गुप्ता रिंकी गुप्ता**

9. लैंगिक समानता : समकालीन मुद्दे ..... 80-83
**लोकेश कुमार मीना**

10. भारतीय सामाजिक परिपेक्ष्य में लैंगिक समानता का स्तर ..... 84-89
**डॉ. जितेन्द्र पाकड़, डॉ. महेश चंद मीना**

11. लैंगिक समानता में शिक्षा की भूमिका ..... 90-96
**डॉ. वर्षा खण्डेलवाल**

12. अष्टाध्यायी में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति ..... 97-101
**डॉ. गुंजन गर्ग**

13. पितृसत्ता और समाज : बदलता स्वरूप ..... 102-114
**डॉ. श्याम सुंदर मीना, डॉ. महाश्रद्धा यादव**

14. लैंगिक समानता के लिए आवश्यक रणनीतियां एवं पहल ..... 115-121
**मनीषा गुप्ता**

15. राष्ट्रीय आन्दोलन एवं लैंगिक समानता ..... 122-126
**रोहिताश्व सिंह**

16. लैंगिक समानता में मीडिया की भूमिका ..... 127-134
**डॉ. अनीता जनजानी**

17. लैंगिक समानता : सामाजिक आर्थिक आयाम ..... 135-142
**कृष्ण प्रकाश माथुर, डॉ. अशोक सेवानी**

18. भारत में लैंगिक असमानता ..... 143-146
**मनीराम मीना**

19. लैंगिक समानता व **सरकारी प्रयास** ..... 147-149
**भीम सिंह मीना**

20. महिलाओं की राजनीति एवं समाज में प्रतिभागिता ..... 150-155
(राजस्थान की राजनीति के संबंध में अध्ययन)
**राजेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ. एच. के. शर्मा**

21. लैंगिक समानता विभिन्न मुद्दे और भारत में चुनौतियाँ ..... 156-161
**कपिल देव कुण्डारा**

22. भारत में लैंगिकता एक विहंगावलोकन ..... 162-167
**डॉ. महेन्द्र कुमार शर्मा**

23. लैंगिक समानता में शिक्षा की भूमिका ..... 168-176
**मंजुल मंयक दीक्षित**

24. लैंगिक समानता : वैदिक वाङ्मय में नारी स्थिति ..... 177-187
**योगेन्द्र सिंह**

# 11

# लैंगिक समानता में शिक्षा की भूमिका

**डॉ. वर्षा खण्डेलवाल**
सहायक आचार्य–संस्कृत
राजकीय कन्या महाविद्यालय
राजसमन्द (राज0)

लैंगिक समानता की अवधारणा समाज में व्याप्त स्त्री–पुरुष के बीच मौजूद असमानता को दूर करने की एक रणनीति है। इसके माध्यम से उन सामाजिक व ऐतिहासिक प्रतिरोधों को दूर करने का प्रयास किया जाता है, जो स्त्री–पुरुष को समान होने से रोकते हैं। इसमें वे सकारात्मक क्रियाएं भी शामिल हैं, जो स्त्री के प्रति एक विशेष व्यवहार को इंगित करती है। महिला सशक्तिकरण समावेशी आर्थिक विकास के केन्द्र में भी है और यह सतत् विकास के लक्ष्यों को हासिल करने के लिये भी महत्वपूर्ण है। लैंगिक समानता का मतलब यह नहीं होना चाहिये कि स्त्री और पुरुष एक समान हो जाए, बल्कि यह होना चाहिये कि विकास के अवसर उसके स्त्री या पुरुष होने पर आधारित न हों। शिक्षा इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

भारत ही नहीं अपितु विश्व के सभी देशों में समाज के महिला व पुरुष के बीच लैंगिक असमानता व्याप्त है। अवधारणात्मक आधार पर लैंगिकता समाज व समुदाय द्वारा स्त्री–पुरुष की सामाजिक भूमिकाओं, जिम्मेदारियां, उनके स्वाभाविक गुणों और शक्ति संबंधों को इंगित करती है। यह संस्कृति क्षेत्रीय विभिन्नता सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति से संबंधित होती है। अर्थात् समाज द्वारा स्त्री व पुरुष में भेदभाव उत्पन्न किया जाता है। महिला व पुरुष के मध्य असमानता समाज की व्यवस्था के अनुसार परिस्थितियों का निर्माण है। ए. ओकले के अनुसार महिलाओं का कार्यक्षेत्र घरेलू व पारिवारिक संगठन का कार्य तथा पुरुषों का कार्यक्षेत्र शारीरिक श्रम को माना गया है। लैंगिक

# वैश्विक पर्यावरण : एक चिन्तन


सम्पादक

**विपुल कुमार परेवा**

सहायक आचार्य – प्राणीशास्त्र
स्व.पं.न.कि.श. राजकीय महाविद्यालय,
दौसा (राज.)

सह सम्पादक

**संतोष कुमार कुण्डारा**

सहायक आचार्य – भौतिक शास्त्र
स्व.पं.न.कि.श. राजकीय महाविद्यालय,
दौसा (राज.)

**डॉ. बाबू लाल बैरवा**

सहायक आचार्य – हिन्दी
स्व.पं.न.कि.श. राजकीय महाविद्यालय,
दौसा (राज.)



**राज पब्लिशिंग हाउस**
जयपुर

प्रकाशक :
किरण परनामी
राज पब्लिशिंग हाउस
44, परनामी मंदिर, गोविन्द मार्ग, जयपुर–302004
Cell : 09414051782
Email : shreerajpublishing@gmail.com

# वैश्विक पर्यावरण : एक चिन्तन

सम्पादक
विपुल कुमार परेवा
सह सम्पादक
संतोष कुमार कुण्डारा
डॉ. बाबू लाल बैरवा

© अध्याय की विषयवस्तु के लेखकाधीन

International Standard Book No. (ISBN) Book
978-81-953834-8-1

संस्करण : मार्च, 2021

पुस्तक वितरण क्षेत्राधिकार : सम्पूर्ण भारत

*पुस्तक प्रकाशन में सम्पूर्ण सावधानी बरती गई है। फिर भी किसी त्रुटि, कमी अथवा लोप का रह जाना मानवीय भूल के कारण संभव हो सकता है। पुस्तक में प्रकाशित लेख के विचारों हेतु सम्पादक एवं प्रकाशक की कोई जिम्मेदारी नहीं हैं।*

मुद्रक
ट्राईडेन्ट एन्टरप्राइजेज, दिल्ली

| | | |
|---|---|---|
| 12. | गाँधी चिंतन के निहितार्थ : पर्यावरण संरक्षण<br>**डॉ. गिरिजा जोशी, डॉ. नीरजा जोशी** | 107 |
| 13. | पर्यावरण एवं ग्रीन हाउस प्रभाव<br>**ओम प्रकाश मीना** | 114 |
| 14. | आदिवासी साहित्य और पर्यावरण विमर्श<br>**हंसराज रैगर** | 120 |
| 15. | हिन्दी साहित्य में पर्यावरण चिंतन<br>**डॉ. रामेश्वर प्रसाद मीना** | 125 |
| 16. | पर्यावरण संरक्षण में सरकार की भूमिका<br>**डॉ. सुरेंद्र सिंह चारण** | 134 |
| 17. | पर्यावरण पर लॉकडाउन के प्रभाव<br>**हरगोविन्द खरेरा** | 141 |
| 18. | दिन प्रतिदिन बढ़ती प्राकृतिक आपदाएँ<br>**महेश चन्द मीना** | 151 |
| 19. | भारत में पर्यावरण संरक्षण संबंधी नीतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन<br>**डॉ. राजकुमार बैरवा** | 166 |
| 20. | राजस्थान में भूमिगत जल स्तर का परिदृश्य (पूर्व तथा पश्च मानसून सर्वेक्षण–2019)<br>**डॉ. कन्हैया लाल मीना** | 177 |
| 21. | Environmental Challenges in India<br>**Chiranji Lal Meena** | 186 |
| 22. | Ecology and Propogation of Succulant Plants in Home Gardening<br>**Ankita Khorwal, Dr. R. N. Khorwal** | 191 |
| 23. | Health Impacts of Climate Change and Stratospheric Ozone Depletion<br>**Rakesh Kumar Baser** | 199 |
| 24. | Pesticides: Another Threat of Climate Change<br>**Dr. Mamta Sharma, Dr. Kalpana Soni** | 207 |
| 25. | Biomedical Waste Management<br>**Dr. Vipin Kumar Bagadia** | 212 |
| 26. | Global Warming Impact and Solution<br>**Nirmala Bansal** | 220 |

# 13

# पर्यावरण एवं ग्रीन हाउस प्रभाव

ओम प्रकाश मीना *

ग्रीन हाउस, हरे रंग के काँच की दीवारों से बनाया गया एक कक्ष होता है। यह सामान्यतया सर्द क्षेत्रों मे बनाया जाता है। इसमें गर्म मौसम की फल–सब्जियों को उगाया जाता है। इसके अन्दर का तापक्रम बाहरी वातावरण की तुलना में बहुत ज्यादा होता है क्योंकि इसकी काँच की दीवारें सूर्य की किरणों को अन्दर तो प्रवेश करने तो देती हैं परंतु इसमें उत्पन्न ऊष्मा को बाहर बहुत कम निकलने देती हैं जिसके कारण अन्दर का तापमान बढ़ जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है की ग्रीन हाउस प्रभाव कृत्रिम रूप से उत्पादित किया जाता है, जिससे विपरीत मौसम में भी आने वाली फलों और सब्जियों को उत्पादित किया जा सके। ग्रीनहाउस प्रभाव या हरितगृह प्रभाव एक प्राकृतिक रूप से होने वाली क्रिया है जिससे किसी ग्रह या उपग्रह के वातावरण में पाई जाने वाली कुछ गैसें वातावरण के तापक्रम को तुलनात्मक रूप से अधिक बनाने में सहायता करतीं हैं। इन ग्रीनहाउस गैसों में मुख्य रूप से कार्बन डाई आक्साइड, जल–वाष्प, मिथेन आदि को शामिल किया जाता है। यदि पृथ्वी पर ग्रीनहाउस प्रभाव नहीं होता तो शायद ही पृथ्वी पर जीवन होता, क्योंकि उस वक्त पृथ्वी का औसत तापमान –18°C होता न कि 15°C धरातल के वातावरण के तापमान को प्रभावित करने वाले कई कारक हैं जिसमें से ग्रीन हाउस प्रभाव एक है।

## ग्रीनहाउस प्रभाव की उत्पत्ति

पृथ्वी के धरातल से ऊपर लगभग 30–35 किमी ऊँचाई तक वायुमण्डल का विशाल सघन घेरा पाया जाता है। प्रमुख रूप से वायुमण्डल

* सहायक आचार्य – वनस्पति शास्त्र, राजकीय महविद्यालय, राजगढ़ (अलवर)

# आधुनिक वैश्विक चिंतन की दशा व दिशा

डॉ. भारतेन्दु गौतम
डॉ. विकास कुमार शर्मा

प्रकाशक :

किरण परनामी

**राज पब्लिशिंग हाउस**

44, परनामी मंदिर, गोविन्द मार्ग, जयपुर–302004

Cell : 09414051782

Email : shreerajpublishing@gmail.com

# आधुनिक वैश्विक चिंतन की दशा व दिशा

© डॉ. भारतेन्दु गौतम

© डॉ. विकास कुमार शर्मा

**Peer Reviewed International Standard Book No. (ISBN) Book**
**978-81-953150-6-2**

संस्करण : 2021

**पुस्तक वितरण क्षेत्राधिकार : सम्पूर्ण भारत ( विश्व )**

*इस पुस्तक की विषय सामग्री, दृष्टांत, चित्र, लेखन पद्धति आदि के सर्वाधिकार पूर्णतया सुरक्षित हैं। इस पुस्तक का कोई भी भाग अथवा अंश संपादक द्वय की पूर्व लिखित अनुमति के बिना कहीं भी किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा पुनर्मुद्रित करना कॉपीराइट एक्ट उल्लंघन माना जायेगा। पुस्तक में प्रकाशित लेखों में प्रस्तुत विचार लेखकों के स्वयं के हैं। किसी लेख के कथ्य–तथ्य की जिम्मेदारी लेखक की होगी। पुस्तक में लेखन, सम्पादन, प्रूफ रीडिंग, मुद्रण आदि में पूर्ण सावधानी रखी गई है। उसके पश्चात् भी यदि कोई मानवीय त्रुटि रह जाती है तो उसके लिए सम्पादक, लेखक, समीक्षा समिति एवं प्रकाशक उत्तरादायी नहीं होंगे।*

मुद्रक

**ट्राईडेन्ट एन्टरप्राइजेज, नोयडा**

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

समन्वयक
Coordinator
युवा विकास केन्द्र
G राजकीय महाविद्यालय Rajgarh

13. दल–बदल कानून : समीक्षा तथा संशोधन की आवश्यकता 140
**चन्द्र प्रकाश माली**

14. सीवियर एक्यूट रेसपाइरेटरी सिन्ड्रोम कोरोना वायरस (SARS-COV) परिचय, परीक्षण और परिणाम 149
**सुलेखा जोशी**

15. जलवायु परिवर्तन 160
**वेणू साहू**

16. लघु उद्योगों के विकास हेतु विभिन्न सरकारी नीतियों की समीक्षा 169
**डॉ. हेमेन्द्र गर्ग, डॉ. सौम्या शर्मा**

17. सांस्कृतिक प्रदूषण 175
**अनुराधा तँवर**

18. जनजातीय शिक्षा : विभिन्न शिक्षा नीतियों के संदर्भ में 181
**डॉ. रजनी मीना**

19. महिलाओं और नवयुवकों की पंचायती राज संस्थाओं में सहभागिता 193
**सुमन नरूका**

20. महिला शोषण व घरेलू हिंसा 202
**डॉ. अर्चना शर्मा**

21. आतंकवाद : वैश्विक चुनौती 217
**सुरेंद्र सिंह**

22. समकालीन भारत में महिला सशक्तिकरण और पंचायतीराज व्यवस्था 228
**अमरनाथ वर्मा**

23. किशोर–किशोरियों पर दूरदर्शन के पड़ने वाले सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय मूल्यांकन 237
**डॉ. नीरू शर्मा**

24. जल संरक्षण एवं जल प्रबन्धन : चित्तौड़गढ़ नगर के प्राचीन जल स्त्रोतों के विशेष सन्दर्भ में 244
**निर्मल देसाई**

25. ग्लोबल वार्मिंग 252
**प्रियंका पंवार**



प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय

Coordinator
GOVT राजकीय महाविद्यालय

18

# जनजातीय शिक्षा : विभिन्न शिक्षा नीतियों के संदर्भ में

डॉ. रजनी मीना*

"शिक्षा सबसे ताकतवर हथियार है जिसका इस्तेमाल आप दुनिया बदलने के लिए कर सकते है।"

– नेल्सन मंडेला

सारांश

मानव एक सामाजिक प्राणी है, वह समाज में जन्म लेता है तथा समस्त सामाजिक क्रिया–कलाप करते हुए वहीं पर मृत्यु को प्राप्त होता है। मनुष्य अपने स्वतंत्र अस्तित्व के साथ–साथ समाज के हित को ध्यान में रखकर सामूहिक रूप से जीवन–यापन कर मानवता का परिचय देता है। कोई भी समाज तभी तक संगठित रहता है जब तक कि उस समाज में सामाजिक व्यवस्था बनी रहती है। इस सामाजिक व्यवस्था की पहचान उसके निवासियों के सामाजिक स्तर से होती है। शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके आधार पर उस समाज के लोगों के सामाजिक स्तर को ऊँचा उठाया जाता है। इस शिक्षा के माध्यम से आधुनिक समाज में व्यक्ति और वर्ग सामाजिक परिवर्तन लाते हैं।

**महत्वपूर्ण शब्दः** सामाजिक प्राणी, मानवता, सामाजिक व्यवस्था, आधुनिक समाज।

शिक्षा सामाजिक पुनर्निर्माण का भी माध्यम है। भारतीय समाज सामान्यतः पदानुक्रमिक रूप में व्यवस्थित है और वहां सर्वत्र सामाजिक असमानताएँ व्याप्त है। ये सामाजिक असमानताऐं ऐतिहासिक दृष्टि से जातीय आधार पर संरचित है। भारतीय समाज में ग्रामीण एवं शहरी समाज, अनुसूचित

* सहायक आचार्य, इतिहास – राजकीय महाविद्यालय, राजगढ, अलवर (राज.)



जातीय एवं अनुसूचित जनजातीय समाज, उच्च व मध्यमवर्गीय समाज आदि अनेक वर्गीकरण है। भारतीय समाज में हाशिए पर रहा एक वर्ग जनजातियों का है। भारत की जनसंख्या में जनजातियों की एक बहुत बडी संख्या पाई जाती है। ये लोग शिकार करके, मछली मारकर या बहुत ही साधारण किस्म की खेती या पशुपालन द्वारा अपना जीवन निर्वाह करते हैं। विभिन्न विद्वानों ने इन्हें विभिन्न नामों से पुकारा है। सर हरबर्ट रोजले, श्री लेसी, श्री अलविन, श्री ए.वी. ठक्कर ने इन्हे आदिवासी नाम दिया है। श्री ग्रियर्सन ने उन्हें पहाडी जनजातियां और जंगली आदिवासी कहा है। टैलेण्टस, सैजविक और मार्टिन ने उन्हें प्रेतवादी माना है। डॉ. हट्टन ने उन्हें 'प्राचीन जनजाति' कहा है। बैन्स ने उन्हें जंगली लोग, जंगली जनजाति अथवा जंगल निवासी कहा है। डॉ. छुरे ने उन्हे 'पिछडा हिन्दू' (Backward Hindu) कहा है। डॉ. दास ने उन्हें विलीन मानवता (Sub Merged Humanity) कहा है। भारतीय संविधान की धारा–342 का सम्बन्ध अनुसूचित जनजातियों से संबधित एक व्यवस्था से है। इसके अनुसार "इन जनजातियों में वे वर्ग या समूह शामिल होंगे जिन्हे राष्ट्रपति सार्वजनिक अधिसूचना द्वारा जनजाति घोषित करेगें।"

1. Mamoria C.B., Population Problems of India 1981, P-193, एवं भारत का वृहत भूगोल पृ. 918 में लिखते हैं कि– "भारत की अनुसूचित जनजातियों के लोग इस देश के आदिवासी या देशी लोग है, जिन्हें महात्मा गांधी ने 'गिरिजन' कहकर पुकारा है। ये जनजातियां आस्ट्रेलायॅड, मंगोलॉयड या नीगीट्रो या हब्शी प्रजातियों से निकली है जो पहाडों और जंगलों में निवास करती है। ये जनजातियां अनेक उपजातियों में विभाजित हैं जो स्वयं अपने आप में परिपूर्ण हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक दृष्टि से ये जनजातियां अपने में अनेक विविधताओं को समेटे हुए है।" भारत सरकार के जनजातीय कार्य मंत्रालय के अनुसार जनजातियों की संख्या 1961 की जनगणना के अनुसार 3 करोड थी जो अब बढकर 10.5 करोड (2011 की जनगणना अनुसार) हो चुकी है। यानि आज भारत की आबादी के 8.5 प्रतिशत से ज्यादा लोग जनजातीय समुदाय से हैं। (चन्द्र मोली सी. 2013, Scheduled Tribes in india : As Revealed in Census 2011, 50)

# कोरोना काल एवं मानव जीवन


- डॉ. बाबूलाल बैरवा
- विपुल कुमार परेवा


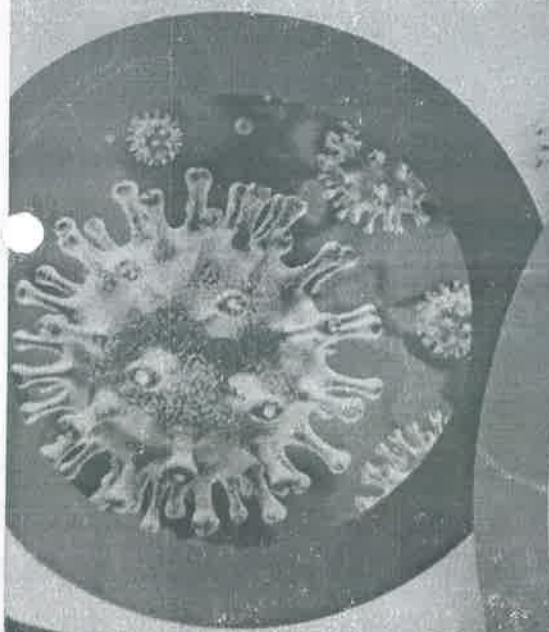

प्रकाशक :
किरण परनामी
राज पब्लिशिंग हाउस
44, परनामी मंदिर, गोविन्द मार्ग, जयपुर–302004
Cell : 09414051782
Email : shreerajpublishing@gmail.com

# कोरोना काल एवं मानव जीवन

© डॉ. बाबूलाल बैरवा 'नागर'
© विपुल कुमार परेवा

International Standard Book No. (ISBN)
978-81-953150-3-1

संस्करण : अप्रेल, 2021

पुस्तक वितरण क्षेत्राधिकार : सम्पूर्ण भारत ( विश्व )

*इस पुस्तक की विषय सामग्री, दृष्टांत, चित्र, लेखन पद्धति आदि के सर्वाधिकार पूर्णतया सुरक्षित हैं। इस पुस्तक का कोई भी भाग अथवा अंश संपादक द्वय की पूर्व लिखित अनुमति के बिना कहीं भी किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा पुनर्मुद्रित करना कॉपीराइट एक्ट उल्लंघन माना जायेगा। पुस्तक में प्रकाशित लेखों में प्रस्तुत विचार लेखकों के स्वयं के हैं। किसी लेख के कथ्य–तथ्य की जिम्मेदारी लेखक की होगी। पुस्तक में लेखन, सम्पादन, प्रूफ रीडिंग, मुद्रण आदि में पूर्ण सावधानी रखी गई है। उसके पश्चात् भी यदि कोई मानवीय त्रूटि रह जाती है तो उसके लिए सम्पादक, लेखक, समीक्षा समिति एवं प्रकाशक उत्तरादायी नहीं होंगे।*

मुद्रक
ट्राईडेन्ट एन्टरप्राइजेज, नोयड़ा

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

समन्वयक
Coordinator
राजकीय महाविद्यालय

11. कोरोना महामारी और मानव जीवन — 67
डॉ. शम्भुलाल मीना'

12. कोविडं–19 का पर्यावरण प्रदूषण पर प्रभाव — 72
प्रकाश चन्द्र बैरवा

13. कोविड – 19 का शिक्षा पर प्रभाव — 78
डॉ. संगीता नागरवाल

14. कोविड–19 महामारी : भारतीय शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव — 85
डॉ. सीमा गर्ग

15. पारिवारिक परिदृश्य और कोरोना काल — 89
चित्रा मीना

16. कोरोनाकाल एवं पर्यावरण का बदला स्वरूप — 95
बृजमोहन मीणा

17. कोविड–19 का शिक्षा पर प्रभाव — 102
डॉ. महेश चन्द मीना

18. कोरोना लॉकडाउन और प्रकृति का नैसर्गिक सौंदर्य में लौट आना — 105
डॉ. भरत लाल मीणा

19. शिक्षा, सुरक्षा और यह कोरोना — 113
रामनरेश मीना

20. कोरोना काल में महिला जीवन — 119
डॉ. रजनी मीना.

21. कोरोना एवं भारतीय अर्थव्यवस्था — 126
रश्मि कुन्द्रा

22. कोविड–19 काल में उच्च शिक्षा और शिक्षण में निरन्तरता हेतु चुनौतियां — 130
समीर शर्मा, विजेंद्र प्रताप सिंह शेखावत

23. भारतीय शिक्षा : परम्परागत एवं कोविड़ काल में — 141
रणसिंह यादव

प्राचार्य
राजकीय ... महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
राजकीय महाविद्यालय

# 20

# कोरोना काल में महिला जीवन

डॉ. रजनी मीना*

समाज की धुरी होने के बावजूद महिलाओं को हमेशा से ही समाज में अपना सम्मानीय स्थान प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ा है। महिलाओं के लंबे संघर्ष और कड़े प्रयासों का नतीजा है कि हमारे पितृसत्तात्मक समाज में वर्तमान समय में लोग महिला सशक्तिकरण को एक मुख्य मुद्दा मानने लगे हैं। और उसको लेकर विभिन्न प्रकार के प्रयास किए जा रहे हैं। इन्हीं प्रयासों में कुछ और कड़ियां जोड़ने के लिए हर साल 8 मार्च को पूरे विश्व में 'महिला दिवस' मनाया जाता है। इस वर्ष यह दिवस दुनिया भर में 'महिला नेतृत्वः कोविड़ –19 की दुनिया में एक समान भविष्य को प्राप्त करना' थीम पर मनाया जा रहा है।

साल 2020 मनुष्य की जिंदगी में कई बड़े बदलाव लेकर आया, वहीं महिलाओं के जीवन में भी कोरोना का खासा असर देखा गया। लॉकडाउन के वक्त लोगों ने अपना सारा वक्त घर पर बिताया। ऐसे में कोरोना काल में लोगों ने अपना ज्यादा से ज्यादा समय अपने घर पर बिताया। वहीं महिलाएं बिना किसी शिकायत न जाने कितनी भूमिकाएं निभाती हुई नजर आई। घर, ऑफिस, बच्चे व बहू न जाने कितने रूपों में महिलाएं खुद को साबित करती रही हैं। कोरोना काल में लॉकडाउन के दौरान जब सभी लोग अपने घर पर ही अपना समय बिता रहे थें, तब महिलाएं मल्टी टास्कर की भूमिका में नजर आई। घर के काम से लेकर घर में बच्चों और बुजुर्गों का ख्याल रखने तक इन सभी जिम्मेदारियों को महिलाओं ने बखूबी निभाया। जब सबको आराम करने का मौका मिला, उस वक्त भी महिलाओं को अपने लिए समय नहीं मिल पाया।

* सहायक आचार्य (इतिहास) – राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़, अलवर ।

# Contemporary Global Issues and Challenges

Dr. Bhartendu Gautam
Dr. Vikas Kumar Sharma

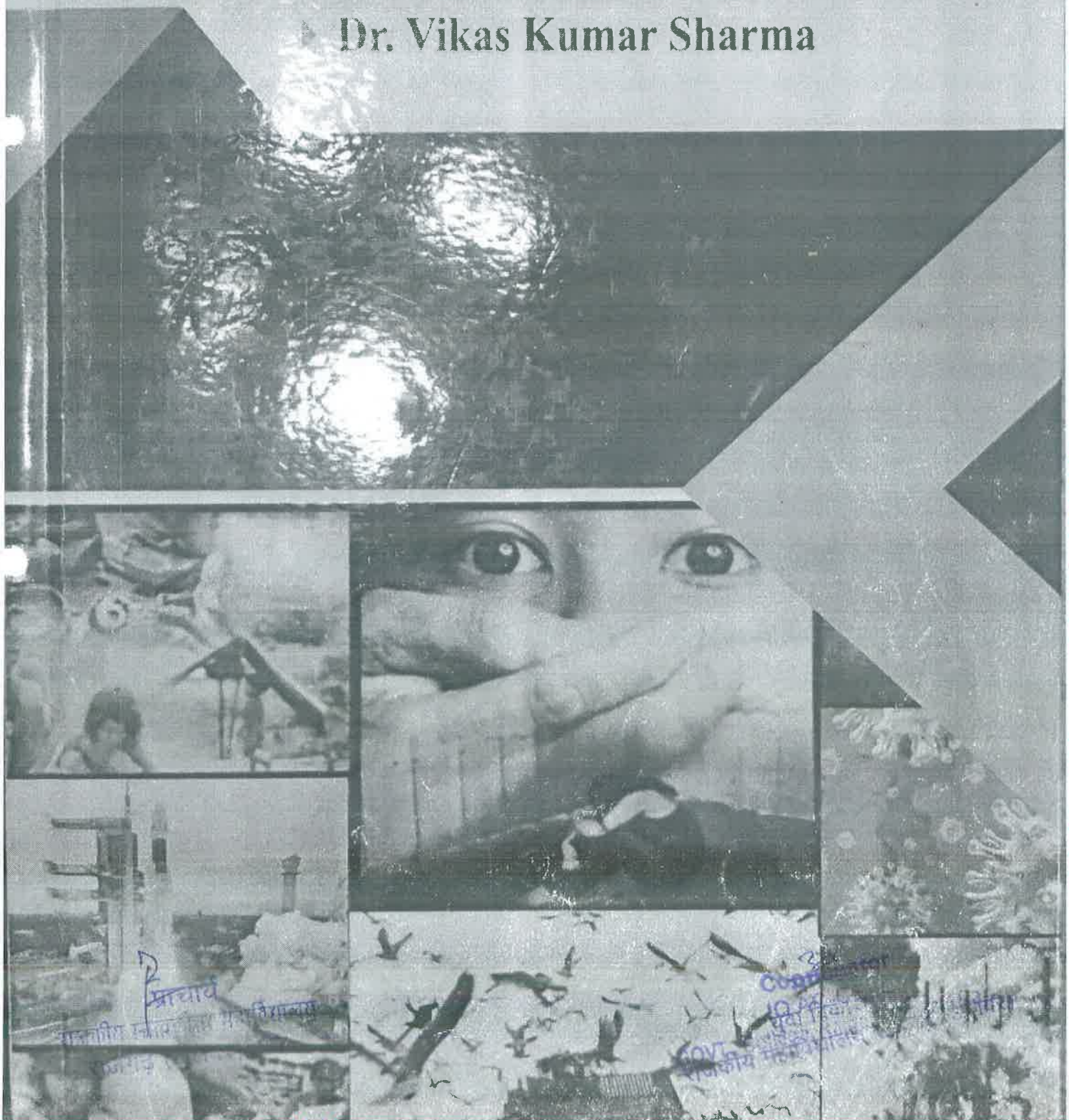

First Published : 2021

ISBN : 978-93-90778-06-5

Peer Reviewed International Standard Book No. (ISBN) Book

© Editors

Price : India : ₹ 1295, Foreign : $ 19

*Published by*

**Sunrise Publisher**

F-10, Janki Vihar Behind Hirapura Power House

Ajmer Road, Jaipur - 302024

*Laser Typesetting by*

**Sunrise Computers**

Jaipur

---

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any from or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, scanning or otherwise, without the prior written permission of the copyright owner. Responsibility for the facts stated, opinions expressed, conclusions reached and plagiarism, if any, in this volume is entirely that of the authors. The Editors do not bear the responsibility for them whatsoever. Although the book is published very carefully, but after all, editors, publisher, review committee members and writers are not responsible for any printing mistakes or human errors, if any.

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar)
राजकीय महाविद्यालय राजगढ़ (अलवर)

**13.** Soil Pollution
**Dr. Manoj Kumar Rawat** 89

**14.** Fast-Fashion and Pollution
**Nikita Sachwani** 96

**15.** Global Warming and Plants
**Dr. Nitika Singh** 10[illegible]

**16.** Labour Laws in India: Issues in Current Labour Laws and the Impact of Ne[illegible]
Labour Codes
**Dr. Rajni Meena** 10[illegible]

**17.** Colonialism
**Dr. Rajesh Kumar Chouhan** 11[illegible]

**18.** Remote Sensing and GIS for Urban Studies
**Dr. Jai Prakash Sharma** 12[illegible]

**19.** Conserving Biodiversity Conserves Carbon
**Sunder Singh** 12[illegible]

**20.** Importance of Algae As a Source of Food and Food Supplement
**Sharad Kumar Singhariya** 13[illegible]

**21.** Ethnobotanical Study of Baran District (South-East Rajasthan)
**Dr. Vandana Sharma, Tikam Chand Nagar** 14[illegible]

**22.** Water Depletion : Environmental Issue to Consider in Current Scenario
**Charul Jain** 15[illegible]

**23.** Role of Indian Supreme Court to Provide Justice in Contemporary India
**Anushka Sharma** 16[illegible]

**24.** Dalits and Globalization
**Dr. Deepti** 17[illegible]

**25.** Impacts of Anthropogenic Activities on the Ecosystem of Mej River
**Dr. Rajendra Prasad** 17[illegible]

**26.** Equity in Global Politics of Climate Change
**Dr. Mahendra Kumar Meena** 19[illegible]

**27.** National Movement and the Enterprise of Social Reform
(With Special Reference to Women in Rajputana)
**Dr. Savita Choudhary** 1[illegible]



प्राचार्य
राजगढ़ (अलवर) राज.
Coordinator
IQAC CELL
Govt. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

16

# Labour Laws in India : Issues in Current Labour Laws and the Impact of New Labour Codes

Dr. Rajni Meena
Assistant Professor, History
Government College, Rajgarh, Alwar (Raj.)

**Abstract**

Strict labour laws and rigid labour markets in India have always been blamed for affecting the country's employment generation and economic growth, especially in the manufacturing sector. However, the labour reforms introduced by the government in 2020, that is, the codification of 44 labour laws into a set of 4 simplified laws has been done to resolve this issue. They are expected to reduce rigidity in the labour market and boost growth and employment. This paper attempts to understand the problems that existed in previous labour laws, and how they impacted hiring and employment in the labour market. Then it explores the four labour codes passed under "Labour Codes Act, 2020" which come under the Ministry of Labour & Employment. The paper seeks to analyse how these codes will impact the labour market, wages, social security and so forth in India.

**Key Words:** Labour laws, Economic Growth, Labour Codes Act, Social Security.

## Issues in Labour Laws

Labour is an important factor of production, but in India, it has neither been allocated traditionally nor optimally. Around half of the labour force is engaged in the agricultural sector, while the rest is divided into the manufacturing and service sector. This poses a major problem for India since growth requires a country to move from agriculture to manufacturing to service sector. The manufacturing sector especially helps in creating most jobs in the country and improves income of the middle-class. But arguably, due to rigid labour laws (along with other factors), the manufacturing sector in India never really developed as it was optimistically expected to. The growth and employment trajectory that had been observed in the case of China never really took place in India. In such a situation, it is essential to analyse the factors that have hindered job growth in the country.



In the context of labour laws, many such reasons have emerged. Firstly, it is often stated that India has very difficult hiring and firing policies, along with the lack of short-term labour contracts. This reduces labour productivity and leads to low capital intensity in production, leading to inefficiency in the manufacturing sector. It also makes entry and exit of firms more difficult, which has hampered growth in the manufacturing sector. Moreover, recent laws such as "Maternity Benefit (Amendment) Act, 2017" which provide paid maternity leave of 26 weeks in the formal sector might increase costs of firms. The state shares no burden in such costs and all the costs have to be borne by the entrepreneurs, which makes the labour market more rigid.

There is also the case of "missing middle" in India, that is, firms of medium-size are missing. The recent economic survey mentions the existence of "dwarf" firms, that is, firms which are more than 10 years old but still employ less than 100 workers and have failed to grow. Both the phenomenon of missing middle and dwarf firms exists because current labour laws are less strict for small firms, which provides them an incentive to remain small. This affects growth of the firm, affecting productivity, employment generations and growth in the long run.

However, Mazumdar et al (2008) argues against the "missing middle" argument, and shows that there is either highly productive or least productive labour in India, not because of strict labour laws but mainly due to infrastructure deficit. Erratic electricity supply, power distribution, lack of credit, etc are the reasons why growth in manufacturing growth actually remains hampered. Moreover, it is also argued that while India's labour laws are strict, they are not strictly followed. Organised sector only constitutes 11% of the economy where these laws are strictly implemented. But in the 89% of the unorganised sector, these laws are largely neglected. Deshpande (2004) shows that India's labour market is not as inflexible as it is made out to be, since labour laws come under state list and states often choose to neglect them.

The argument of stricter job security or labour protection laws also lacks evidential validation. Cai et al (2008) compares labour protection in India and China (which is considered to be more flexible with labour laws than India), and shows that labour protection laws are stricter in China than India. For instance, during massive lay-offs, the Chinese state provides public subsidies, unemployment benefits, etc. In the 1990s when lay- offs augmented, firms were allowed to fire only 1% of the labours per year. When we compare India's labour protection laws with them, the concept of minimum wage, unemployment benefits, insurance, pension, etc has traditionally been missing in the unorganised sector. (The state has only recently taken up some new initiatives.)

In reality, it is not strict labour laws but the existence of multiple labour laws which has led to confusion and prevented firms from entering or expanding. But in 2020, the 44 labour laws were rationalised into 4 labour codes, which are expected to reduce complexity in labour laws and improve investment and growth. They aim to reduce rigidity in the labour market and boost growth and employment. These are

2021 Dr. Sumar Singh

RBH

# संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण चिन्तन

डॉ. राकेश कुमार

Scanned with CamScanner

प्रकाशक :
किरण परनामी
राज पब्लिशिंग हाउस
44, परनामी मन्दिर, गोविन्द मार्ग, जयपुर–302004
Cell : 09414051782
Email : shreerajpublishing@gmail.com

संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण चिन्तन

डॉ. राकेश कुमार

© अध्याय की विषय वस्तु लेखकाधीन

Peer Reviewed International Standard Book No. (ISBN) Book
978-93-91777-23-4

संस्करण : 2021

पुस्तक वितरण क्षेत्राधिकार : सम्पूर्ण भारत

*पुस्तक प्रकाशन में पूर्ण सावधानी बरती गई है। फिर भी किसी त्रुटि, कमी अथवा लोप का रह जाना मानवीय भूल के कारण संभव हो सकता है। पुस्तक के किसी भी भाग को इलेक्ट्रॉनिक, इलेक्ट्रोस्टेटिक, मैग्नेटिक, सी.डी., टेप, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, ध्वनि अथवा अन्य किसी माध्यम पर प्रकाशक व लेखक की पूर्वानुमति के बिना संग्रहित नहीं किया जा सकता है। पुस्तक में प्रकाशित लेखक के विचारों हेतु सम्पादक एवं प्रकाशक की कोई जिम्मेदारी नहीं है। यह उनके व्यक्तिगत विचार हैं। इनसे किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए सम्पादक और प्रकाशक उत्तरदायी नहीं हैं। किसी भी विवादास्पद स्थिति में न्यायालय क्षेत्र जयपुर होगा।*

मुद्रक
ट्राईडेन्ट एन्टरप्राइजेज, दिल्ली

Scanned with CamScanner

# विषयानुक्रमणिका


| अध्याय | विषय वस्तु | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| | समर्पण | (i) |
| | शुभाशंसनम् – डॉ. हुकम सिंह "निर्भय" | (ii) |
| | सम्पादकीय – डॉ. राकेश कुमार | (v) |
| 1. | साहित्य, प्रकृति और पर्यावरण<br>**आचार्य डॉ. महेश चन्द्र शर्मा** | 1 |
| 2. | डॉ. इच्छाराम द्विवेदी की कृतियों में सामाजिक पर्यावरण चिन्तन<br>**डॉ. बाबूलाल मीना** | 21 |
| 3. | वैदिक साहित्य में पर्यावरण चिन्तन<br>**डॉ. बुद्धमति यादव** | 39 |
| 4. | संस्कृत वाङ्मय की विविध विधाओं में पर्यावरण संचेतना<br>**डॉ. बदलूराम शास्त्री, डॉ. राकेश कुमार** | 49 |
| 5. | वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण संरक्षण की वर्तमान में प्रासंगिकता – एक अभ्यास<br>**डॉ. मूल चन्द** | 63 |
| 6. | वैदिक साहित्य में निहित पर्यावरणीय संचेतना<br>**डॉ. महेन्द्र सिंह** | 74 |
| 7. | वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण संरक्षण के विविध सन्दर्भ<br>**डॉ. मधुबाला मीना** | 80 |
| 8. | प्रमुख संस्कृत पुराणों में पर्यावरण संचेतना<br>**डॉ. आशा सिंह रावत** | 96 |



प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
समन्वयक
IQAC CELL
GOVT. P.G. College Rajgarh (Alwar) Raj.
राजकीय महाविद्यालय राजगढ़ (अलवर)

Scanned with CamScanner

# 14

# महाकवि कालिदास का प्रकृति प्रेम

**डॉ. सुमेर सिंह बैरवा**
असिस्टेंट प्रोफेसर – संस्कृत विभाग
राजकीय महाविद्यालय राजगढ़, अलवर (राज.)

संस्कृत जानने वाला ऐसा कौन प्राणी होगा, जिसने महाकवि कालिदास का नाम नहीं सुना होगा। महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं उनकी कवित्व शक्ति और उनकी प्रतिभा के कारण ही उन्हें कवि कुलगुरु की उपाधि से विभूषित किया गया है। वास्तव में महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य रूप मणिमाला के वह मध्यमणि सुमेर माने जाते हैं, जिनको पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों ने एक अद्वितीय कवि माना है, उनकी बहुमुखी प्रतिभा के कारण ही उन्हें अन्य कवियों में विशिष्टता प्राप्त है। महाकवि कालिदास के प्रकृति प्रेम की बात की जाए तो उनके समान प्रकृति प्रेमी कवि कम ही देखने को मिलते है। यह सर्वविदित है कि कालिदास की काव्य कला का विकास ही प्रकृति चित्रण से प्रारम्भ होता है। जो उनकी काव्य प्रतिभा का प्रमाण माना जाता है। उनकी रचनाओं में कथानक गौण माना जाता है और प्रकृति ही सब कुछ मानी जाती है। क्योंकि महाकवि कालिदास प्रकृति प्रेमी ही नहीं, प्रकृति के उपासक भी माने जाते हैं। क्योंकि महाकवि कालिदास ने पुरुष और प्रकृति के साथ जो तादात्मय स्थापित किया है, वह अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। वस्तुतः कालिदास की कला का विकास ही प्रकृति चित्रण से प्रारंभ होता है। वह प्रकृति के अनन्य भक्त माने जाते हैं। महाकवि कालिदास ने अपने काव्य एवं नाटकों में प्रकृति का निरूपण तो किया ही है किन्तु स्वतंत्र रूप से प्रकृति के चित्रण का जो रूप देखने को मिलता है वह रूप हमको ऋतुसंहार में देखने को मिलता है, जिसमें कवि ने विभिन्न ऋतुओं से मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों तथा उसके परिणामों का वर्णन किया है। ऋतुसंहार, प्रथम सर्ग के प्रथम श्लोक में ग्रीष्म ऋतु का बड़ा ही सजीव चित्रण देखने को मिलता है –

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC
GOVT. युवा विद्...
राजकीय महाविद्यालय

Scanned with CamScanner

RBH

# संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण चिन्तन

डा. राकेश कुमार

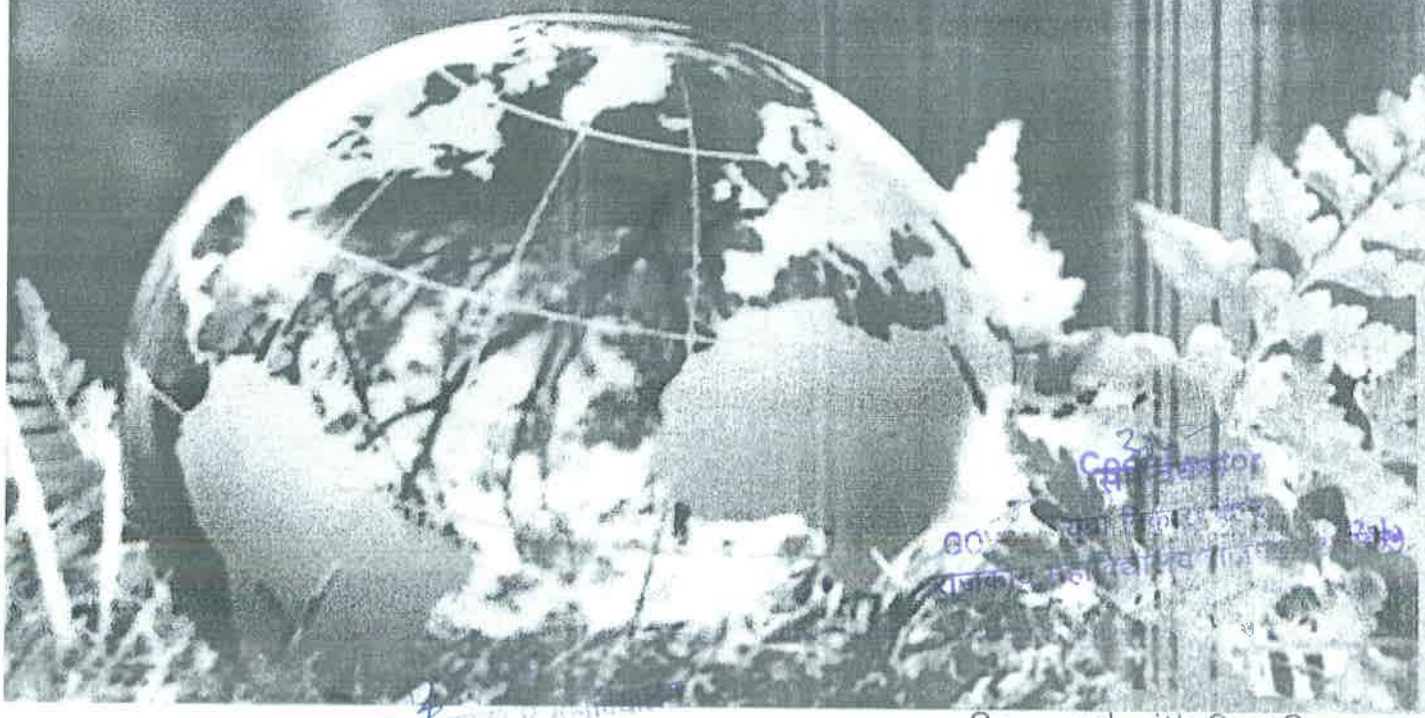

Scanned with CamScanner

# विषयानुक्रमणिका


| अध्याय | विषय वस्तु | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| | समर्पण | (i) |
| | शुभाशंसनम् – डॉ. हुकम सिंह 'निर्मय' | (ii) |
| | सम्पादकीय – डॉ. राकेश कुमार | (v) |
| 1. | साहित्य, प्रकृति और पर्यावरण<br>आचार्य डॉ. महेश चन्द्र शर्मा | 1 |
| 2. | डॉ. इच्छाराम द्विवेदी की कृतियों में सामाजिक पर्यावरण चिन्तन<br>डॉ. बाबूलाल मीना | 21 |
| 3. | वैदिक साहित्य में पर्यावरण चिन्तन<br>डॉ. बुद्धमति यादव | 39 |
| 4. | संस्कृत वाङ्मय की विविध विधाओं में पर्यावरण संचेतना<br>डॉ. बदलूराम शास्त्री, डॉ. राकेश कुमार | 49 |
| 5. | वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण संरक्षण की वर्तमान में प्रासंगिकता<br>– एक अध्यास<br>डॉ. मूल चन्द | 63 |
| 6. | वैदिक साहित्य में निहित पर्यावरणीय संचेतना<br>डॉ. महेन्द्र सिंह | 74 |
| 7. | वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण संरक्षण के विविध सन्दर्भ<br>डॉ. मधुबाला मीना | 80 |
| 8. | प्रमुख संस्कृत पुराणों में पर्यावरण संचेतना<br>डॉ. आशा सिंह रावत | 96 |



प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

समन्वयक Coordinator
IQAC Cell
GOVT. युवा विकास केन्द्र
राजकीय महाविद्यालय राजगढ़ (अलवर)

Scanned with CamScanner

# 13

# भूमंडलीकरण के दौर में परिवर्तित होता सामाजिक पर्यावरण

**डॉ. जगजीत सिंह कविया**
एसोसिएट प्रोफेसर – समाजशास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय, राड़ावास, जयपुर (राज.)

**हेमराज पलसानिया**
असिस्टेंट प्रोफेसर – संस्कृत विभाग
बाबा गंगादास राजकीय महिला महाविद्यालय, शाहपुरा, जयपुर (राज.)

परिवार मानव समाज की मौलिक एवं सार्वभौमिक इकाई है। मानव एक सामाजिक प्राणी है, लेकिन सबसे पहले वह पारिवारिक प्राणी है, क्योंकि यह परिवार ही है जो जैविकीय प्राणी को सामाजिक प्राणी में रूपान्तरित करता है।

परिवार, विवाह और नातेदारी किसी भी समाज की वे आधारभूत इकाइयां हैं, जो विभिन्न स्वरूपों के सामाजिक सम्बन्धों को सांस्कृतिक वैधता प्रदान करती हैं। ये संरचनात्मक इकाइयां जहां एक तरफ अनौपचारिक–अन्तःवैयक्तिक–मनोभावनात्मक–परार्थवादी प्रकृति के सम्बन्धों को निर्मित करती हैं एवं उन्हें विस्तार देती हैं, वहीं दूसरी तरफ अनुशासन, आज्ञाकारिता, समर्पण एवं कर्त्तव्य परायणता की मूल्य प्रणालियों को सामाजिक इकाई के व्यक्तित्व का अन्तरंग बनाती हैं। इस प्रकार यह ढांचा तनाव प्रबन्धन तथा सामाजिक संरचना में विखण्डन की सम्भावनाओं को न्यूनतम करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

21वीं सदी में मार्क्सवादी अवधारणा शिथिल होने के बावजूद, मार्क्स का यह विचार कि 'आर्थिक परिवर्तन ही सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन का कारण है'। आज भी प्रासंगिक है। भूमंडलीकरण की आंधी जो 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध में चली, उसके केन्द्र में आर्थिक पहलू ही विराजमान था, फलतः अर्थव्यवस्था में परिवर्तन के परिणामस्वरूप समाज, संस्कृति, राजनीति आदि अधिरचनाएं भी बदले बिना नहीं रह सकीं। इसी पृष्ठ भूमिका में समाज की एक इकाई होने के कारण परिवार का स्वरूप भी बदलना स्वाभाविक था। जहां पहले परिवार समूह के रूप में होते थे, इसके बाद संयुक्त परिवार का रूप आया, आज परिवार के इस रूप में भी शीघ्रता से परिवर्तन होकर इसका आकार लघु से लघूतर होता जा रहा है।



## भूमंडलीकरण क्या है ?

भूमंडलीकरण एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक देश की अर्थव्यवस्था वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ती है एवं जिसका प्रभाव समाज, संस्कृति, राजनीति अन्य क्षेत्रों पर गहरे रूप से पड़ता है। यह विश्वव्यापी स्तर देशों की निर्भरता की बढ़ती हुई प्रवृत्ति है तथा यह सीमा से परे अन्तर्राष्ट्रीय पूंजी का तीव्र प्रवाह और वस्तुओं तथा सेवाओं के लेनदेन की क्रिया है।

अंग्रेजी के **'ग्लोबलाइजेशन'** (Globalization) शब्द के लिए हिंदी में 'भूमंडलीकरण' शब्द प्रचलित है, जिसका शाब्दिक अर्थ स्थानीक या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है। इसे एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है, जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का संयोजन है। इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि प्रत्येक देश का अन्य देशों के साथ वस्तु, सेवा, पूँजी एवं बौद्धिक संपदा का अप्रतिबन्धित आदान–प्रदान ही भूमंडलीकरण है।

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में देश एक–दूसरे पर परस्पर निर्भर हो जाते हैं और लोगों के बीच की दूरियां घट जाती हैं। एक देश अपने विकास के लिए दूसरे देशों पर निर्भर करता है। भूमंडलीकरण के लिए एक अन्य शब्द प्रयुक्त किया जाता है **'वैश्वीकरण'। प्रोफेसर अमर्त्य सेन वैश्वीकरण के संदर्भ में लिखते हैं,** "वैश्वीकरण को महज विचारों एवं विश्वासों के पश्चिमी उपनिवेशवाद के तौर पर देखना बहुत भारी भूल होगी," निश्चय ही वैश्वीकरण से संबंधित कई मुद्दे हैं जो उपनिवेशवाद से जुड़े है। विजय का इतिहास उपनिवेशवाद एवं विदेशी कानून जो आज भी कई मायने में प्रासंगिक है और उपनिवेशवाद के बाद के विश्व की अपनी विशेषताएं हैं। लेकिन मुख्य रूप से उपनिवेशवाद के लक्ष्यों के रूप में देखना भारी गलती होगी, यह उससे कहीं बहुत ज्यादा है।

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को समझते हुए यह कहा जा सकता है कि, उद्योग अब राष्ट्र की सीमा से बँधे उपक्रम नहीं रहे। पूरा विश्व अब मुक्त औद्योगिक क्षेत्र बन गया है। तकनीकी प्रगति के कारण संपर्क और यातायात की बाधाएं समाप्त हो चुकी हैं। वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया ने समुचे विश्व को

Scanned with CamScanner

# वैश्विक आपदा कोविड-19 के परिदृश्य

## ( शिक्षा, प्रशासन एवं मीडिया )


सम्पादक

**डॉ. राजेन्द्र सिंह गुर्जर**

एसोसिएट प्रोफेसर
स्व. पं. न. कि. शर्मा राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दौसा ( राजस्थान ) 303303

सह-सम्पादक

**डॉ. रिषि केश मीना**

असिस्टेंट प्रोफेसर
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर

**डॉ. महेश चन्द मीना**

असिस्टेंट प्रोफेसर
स्व. पं. न. कि. शर्मा राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
दौसा ( राजस्थान ) 303303



लोटस बुक्स, जयपुर

प्रकाशक :
लोटस बुक्स
( हाउस ऑफ क्वालिटी पब्लिकेशन्स )
319–ए, रोचा सदन के पास, आदर्श नगर, जयपुर–302004
Call : 07597939129
Email : lotusbooks123@gmail.com

# वैश्विक आपदा कोविड-19 के परिदृश्य
( शिक्षा, प्रशासन एवं मीडिया )

सम्पादक
डॉ. राजेन्द्र सिंह गुर्जर
सह-सम्पादक
डॉ. रिषी केश मीना
डॉ. महेश चन्द मीना

© अध्याय की विषयवस्तु के लेखकाधीन

International Standard Book No. (ISBN)
978-81-952691-5-0
Edition : 2021

**पुस्तक वितरण क्षेत्राधिकार : सम्पूर्ण भारत**

*पुस्तक प्रकाशन में सम्पूर्ण सावधानी बरती गई है। फिर भी किसी त्रुटि, कमी अथवा लोप का रह जाना मानवीय भूल के कारण संभव हो सकता है। जिसके लिए सम्पादक, लेखक, प्रकाशक, वितरक अथवा मुद्रक का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा।*

मुद्रक :
ट्राईडेन्ट एन्टरप्राइजेज, दिल्ली

12. कोविड़–19 के कारण उच्च शिक्षा के क्षेत्र में परिलक्षित बदलाव एवं चुनौतियाँ
डॉ. समय सिंह मीना 92

13. कोविड–19 के संदर्भ में उच्च शिक्षा में 'नव सामान्य' की अवधारणा का मूल्यांकन
शोभा गौतम 98

14. कोविड–19 आपदा में अवसर
श्री गजेन्द्र राठौड़ 109

15. कोरोना (कोविड–19) का शिक्षा पर प्रभाव
ओम प्रकाश मीना 118

16. कोरोना वायरस और विज्ञान
मनोज कुमार मीना 124

17. कोविड–19 में लॉकडाउन के प्रभाव
प्रिया, गुंजन दुबे व ललिता 130

18. लोक प्रशासन पर कोविड़– 19 का प्रभाव
डॉ. शिव कुमार मीणा 144

19.. कोरोना संक्रमण काल में मीडिया की भूमिका एवं प्रभाव : एक अध्ययन
डॉ. वर्षा खण्डेलवाल 153

# 15

# कोरोना ( कोविड-19 ) का शिक्षा पर प्रभाव

ओम प्रकाश मीना*

मार्च 2020 में लॉकडाउन के चार महीने बाद मंदिर, मस्जिद, गुरद्वारे और गिरजाघर तो खुल गए मगर स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय आदि शिक्षा के दरवाजे बंद हैं। ऑनलाइन शिक्षा जारी है मगर स्कूल, कॉलेज, टेक्निकल इंस्टीट्यूट जाए बिना बच्चों से असल पढ़ाई–लिखाई नहीं करवाई जा सकती है। देश के लाखो–करोड़ों विद्यार्थी नोबेल पुरस्कार विजेता कवि, लेखक, पेंटर, दार्शनिक, वैज्ञानिक नहीं हैं जो घर पर मिली शिक्षा के आधार पर पूरी दुनिया से प्रतियोगिता कर पाएंगे। जन–स्वास्थ्य सेवाओं का तंत्र त्वरित गति से बढ़ रहे संक्रमितों की सेवा में चरमरा रहा है, वहीं शिक्षा का तंत्र लॉकडाउन की वजह से अस्त–व्यस्त है।

शिक्षण संस्थानों के पुनः खुलने पर सबसे ज्यादा खतरा विद्यार्थियों के लिए तो है ही मगर बंद रहने से अनेक कॉलेज एवं इंस्टीट्यूट का अस्तित्व समाप्त होने को है। ऑनलाइन शिक्षा भी उन कुछ बच्चों तक ऐसे राज्यों में ही पहुंच पा रही है जहां बच्चों के पास स्मार्ट मोबाइल फोन के साथ इंटरनेट का ब्रॉडबैंड नेटवर्क मौजूद है। भारत के ज्यादातर गांवों में बॉडबैंड नहीं है, अनेक गांवों में बिजली भी प्रत्येक घर को उपलब्ध नहीं है। इन परिस्थितियों में सभी बच्चे ऑनलाइन शिक्षा को प्राप्त नहीं कर पाएंगे। निश्चित रूप से वो बच्चे स्कूल, इंस्टीट्यूट में ही शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। यूजीसी के अनुसार अभी भारत में 950 विश्वविद्यालय हैं जिनमें निजी विश्वविद्यालयों की संख्या 361 है।

ताजा सर्वेक्षण के अनुसार शैक्षणिक वर्ष 2019–20 में लगभग 7.7 लाख स्नातक विद्यार्थियों ने निजी विश्वविद्यालयों में प्रवेश लिया, इनमें लड़कों की

* सहायक आचार्य– वनस्पति शास्त्र, राजकीय महाविद्यालय राजगढ़ (अलवर)

2020-21

**Om Prakash Meena,**
Assistant Professor, Department of Botany,
Govt. P.G. College, Rajgarh (Alwar) Rajasthan
**DOB** - 26-06-1976
**Email** - op21meena@gmail.com

- Attended Seminar/Conference 65 National and 16 International
- Presented Papers in National Seminar 15
- Presented Papers in International Seminar 4
- Books Publication 2 National level
- Published papers in International Research journals 4
- Published papers in National Research journals 4
- Chapter in edited books 4

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
...गढ़ (अलवर) राज.

**MD Prakashan**
**Chaura Rasta, Jaipur**
M.: 91663 43237
e-mail: mdprakashan2020@gmail.com

Plant Physiology
The Integration of Disciplines
Om Prakash Meena

# Plant Physiology

## The Integration of Disciplines

ISBN : 978-81-949331-6-8
Edition : 2021

Coordinator
IQAC Cell
GOVT. College, Rajgarh (Alwar)
राजकीय महाविद्यालय राजगढ़ (अलवर)

Scanned with CamScanner

# PLANT PHYSIOLOGY

## The Integration of Disciplines

**Om Prakash Meena**
Assistant Professor,
Department of Botany,
Govt. P.G. College, Rajgarh, Alwar (Raj.)

**M.D. PRAKASHAN**
JAIPUR

*By :*
**Om Prakash Meena**

*Published By :*
**M.D. PRAKASHAN**
Choura Rasta,
Jaipur, Rajasthan
E-mail : mdprakashan2020@gmail.com

©Reserved

ISBN : 978-81-949331-6-8

Rs. 1500/-

First Edition - 2021

Laser Typesetting : JAIPUR

Printed at : Trident Enterprises, Noida (U.P.)

All rights reserved. No part of this book may be reproduced in any form or by any mean without permission in writing from the publisher.

# Contents


| | | |
|---|---|---|
| *Preface* | | *iii* |
| 1. | Plant Physiology: The Integration of Disciplines | 1 |
| 2. | Imbibitions, Osmosis and Diffusion | 34 |
| 3. | Plant Cells: Structure and Function | 65 |
| 4. | Transpiration of Soil and Water Relations | 89 |
| 5. | Method of Experimentation in Plant Nutrition | 153 |
| 6. | The Analysis of Plant Growth and Plant Hormone | 203 |
| 7. | Evolutionary Plant Physiology and Soil Water | 242 |

National E-Seminar on Environment Decay and Ecosystem Restoration:
"Present Scenario Amid Pandemic"
Saturday, 5th June, 2021 (World Environment Day)

ISBN 978-93-87252-37-0

Organized By
Department of Botany & Zoology
DOMINANT COLLEGE OF EDUCATION, DAUSA (RAJ)
*[Approved by Govt. of Rajasthan & Affiliated to University of Rajasthan, Jaipur]*

Copyright © 2021, Surya Prakashan Mandir, Bikaner (Raj.)

All rights reserved.

No part of this book may be reproduced in any form of print & electronic means without the written permission of the copyright owner.

Published By:

Surya Prakashan Mandir (Regd.) Dauji Road, Bikaner (Raj) India

## DISCLAIMER

The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The Publisher or editors do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

Typeset & Prepared
Matadeen Sain
# Ayodhya Nagar, Sainthal Road, Dausa (Raj.) 303303
E-Mail: sainmatadeen155@gmail.com
Mob. No. +91 7742 97 0315

# National E- Seminar
on
# Environment Decay and Ecosystem Restoration: "Present Scenario Amid Pandemic"
## Saturday, 5th June, 2021 (World Environment Day)

## Table of Contents


| S.No. | Author | Title | Page No. |
|---|---|---|---|
| | | **Invited Talks** | |
| 1 | Madhur Mohan Ranga | ENVIRONMENT: PROTECTION AND ENHANCEMENT | 01 |
| 2 | N.K. Dubey | CURRENT STATE AND FUTURE IMPACTS OF CLIMATE CHANGE ON BIODIVERSITY | 02 |
| 3 | Chandra Kant Sharma | ROLE OF ORGANIC FOOD MATERIALS AND NANOTECHNOLOGY IN PRESENT SCENARIO | 03 |
| 4 | शिव शरण कौशिक | साहित्य में पर्यावरण चेतना (हिंदी कविता के विशेष संदर्भ में) | 04 |
| 5 | V. Ketan Kumar | ENVIRONMENT DECAY AND ECOSYSTEM RESTORATION: "PRESENT SCENARIO AMID PANDEMIC" | 11 |
| 6 | पुष्पा बुटोलिया | कोविड–19 महामारी में अधिरोपित लॉकडाउन का पर्यावरण पर प्रभाव | 12 |
| 7 | Prashant Bissa | NILGAI (Blue-bull): THREATS ON AGRICULTURE CROPS IN THAR DESERT, INDIA | 13 |
| 8 | C. P. Mahendra | THE ENVIRONMENTAL EFFECTS OF CLIMATE CHANGE AND CONFERENCE OF PARTIES | 14 |
| 9 | कमलेश माथुर | ऐतिहासिक संदर्भ में पर्यावरण और महात्मा गाँधी | 15 |
| 10 | Sandeep Arya | ECOSYSTEM RESTORATION IN PRESENT SCENARIO PANDEMIC | 18 |
| 11 | Mustaqeem Mohammed Abbas | SYNTHESIS OF PHARMACOLOGICALLY ACTIVE HETEROCYCLES BY USING NANO CATALYST | 19 |
| 12 | Shafqat Alauddin | WATER CONSERVATION | 20 |
| | | **Oral/Paper Presentation** | |
| 13 | Rashmi Thakkar, Rita Kumar, Nirmal Kumar, Dharitri Ramanlal | EVALUATION OF WATER QUALITY INDEX (WQI) OF GROUNDWATER FROM SELECTED SITES OF ANAND DISTRICT | 22 |
| 14 | Murlidhar Panchariya, R.K. Purohit, Indu Bala, Aruna Chakrawarti, Manisha Agarwal | USE OF LOW DOSE RADIATION THERAPY IN CORONA TREATMENT | 23 |
| 15 | Pratap Chand Mali, Samiya Khan | IMPACT OF HUMAN ACTIVITIES ON ENVIRONMENT AND WILDLIFE CONSERVATION | 24 |
| 16 | Madan Lal Meghwal, K. C. Soni | NEST SITE SELECTION BEHAVIOUR OF BLACK-WINGED KITE (*Elanus caeruleus*) INHABITING THE ARID ZONE OF RAJASTHAN | 25 |
| 17 | Guneet Gaur, Gurpreet Kaur | IMPACTS OF COVID-19 PANDEMIC ON ENVIRONMENT | 26 |
| 18 | Gurpreet Kaur | OCCURRENCE AND ECOTOXICOLOGICAL RISKS OF ANTIVIRAL DRUGS IN AQUATICENVIRONMENT | 27 |


ISBN 978-93-87252-37-0 | Organized By: Department of Botany & Zoology
Dominant College of Education, Dausa (Raj)

NATIONAL E-SEMINAR
On
Environment Decay and Ecosystem Restoration:
"Present Scenario Amid Pandemic"
Saturday, 5th June, 2021 (World Environment Day)

# साहित्य में पर्यावरण चेतना
## (हिंदी कविता के विशेष संदर्भ में )

**डॉ. शिव शरण कौशिक**
एसोसिएट प्रोफेसर (हिंदी विभाग )
राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़ (अलवर) राजस्थान
Email: drssk64@gmail.com

## सारांश

वर्तमान में साहित्य भी विचारधारा और जीवनोद्देश्यता की केंद्रीयता से हटकर विमर्शो का केंद्र बन गया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास तथा जनतांत्रिक मूल्यों की स्थापना के साथ ही साहित्य में भी अनेक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। ये परिवर्तन विषयगत और शिल्पगत दोनों ही रूपों में हैं। जहाँ एक ओर औद्योगिक संस्कृति ने साहित्य को आधुनिकता की अवधारणा प्रदान की थी तो नई प्रौद्योगिक संस्कृति ने हमें समकालीनता या यूं कहें कि तात्कालिकता का पाठ पढ़ाया है जिसमें सब कुछ स्थाई नहीं होता बल्कि तात्कालिक होता है । जीवन का उद्देश्य, जीवन मूल्य, इसी तरह साहित्य का उद्देश्य, साहित्य के मूल्य सब में तात्कालिकता समा गई है । वर्तमान के इस प्रौद्योगिकी युग में मनुष्य ने प्रकृति के सहकार को छोड़कर उसके दोहन को प्राथमिकता दी है अर्थात मनुष्य ने प्रकृति का शोषण किया है,वह प्रकृति से अलग होकर नई संस्कृति का निर्माण करने लगा जिसका परिणाम ही पर्यावरणीय विनाश है ।
मूलतः विज्ञान मनुष्य और प्रकृति के रहस्यों तथा परस्पर संबंधों को स्पष्ट करता है, जबकि प्रौद्योगिकी राजनीति और अर्थनीति से परिचालित होती है । वर्तमान में विज्ञान का उपयोग प्रौद्योगिकी के विस्तार में ही अधिक किया जा रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी को अपने लाभ के लिए उपयोग लेने में अग्रणी भूमिका निभाई है। मानवीय तथा सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति में उनकी कोई रुचि नहीं रही। आधुनिक प्रौद्योगिकी की सबसे बड़ी समस्या यह भी है कि यह ऊर्जा के वर्तमान भंडारों पर निर्भर है जो निरंतर कम होते जा रहे हैं जैसे कोयला, पेट्रोलियम आदि । वैचारिक स्तर पर देश और दुनिया में घटने वाली प्रकृति के विनाश की घटनाओं और आहत होती मानवता को बचाने के लिए निरंतर वैचारिक आंदोलन होते रहे हैं ।इसके अनेक दर्शन भी रूपायित हुए हैं जिन्होंने शुरू में आंदोलनों के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज की और कालांतर में वे सृजनात्मकता के साथ साहित्यिक रचनाओं में भी अभिव्यक्त होने लगे। वर्तमान भारतीय साहित्य में पर्यावरण और पारिस्थितिकी की चेतना को सभी भाषाओं में और उनके रचनाकारों द्वारा विभिन्न विधाओं में गहराई से अभिव्यक्ति प्रदान की जा रही है ।
साहित्य में, विशेष रुप से हिंदी साहित्य में पर्यावरण से संबंधित विचार को, जो उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी,निबंध तथा प्रमुख रूप से कविता जैसी लोकप्रिय विधा में जो अभिव्यक्ति मिली वही आगे चलकर साहित्य की पारिस्थितिकीश, साहित्य का पर्यावरण विमर्श आदि नामों से अभिहित किया गया । समकालीन रचनाओं में पर्यावरण विमर्श हमें प्रचुर मात्रा में देखने को मिलता है। वस्तुतः 90 के दशक में वैश्वीकरण की घटना के बाद दुनिया के विकासशील देशों में नए–नए विमर्शो की कि उदभावना हुई जिसमें पिछड़ी जातियों, आदिवासियों, शोषित व स्त्रियों के साथ पर्यावरण की चिंताएं भी विमर्श के केंद्र में आई। प्रकृति और पर्यावरण की चिंताएं हमारे देश में तो सदियों से रही हैं और भारत की संस्कृति तो मूलतः प्रकृति प्रेमी ही रही है । प्रकृति के प्रति भारतीय जनमानस का भाव सदा से संरक्षक का ही रहा है किंतु पूर्वोक्त